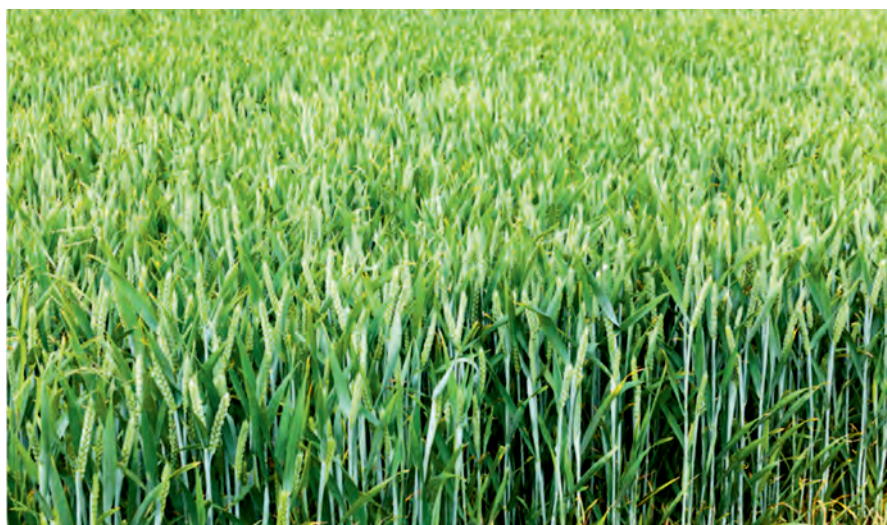




ओट्स की उन्नत खेती

अर्चना कुमारी*



॥ ओट्स एक महत्वपूर्ण अनाज फसल के साथ ही चारा फसल भी है। इसकी खेती गेहूं की फसल के समान है। इसे मुख्य रूप से टेम्परेट और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाया जाता है। यह उच्च ऊंचाई उष्णकटिबंधीय स्थितियों में भी अच्छी तरह से बढ़ सकता है। यह अपने स्वास्थ्य लाभ के कारण बहुत लोकप्रिय है। ओटमील एक बहुत स्वास्थ्यवर्द्धक आहार है। ओट, प्रोटीन और फाइबर से समृद्ध है। यह वजन घटाने, रक्तचाप को नियंत्रित करने और मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली के निर्माण में भी मदद करता है। ॥

ओट्स, रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करके उसे सामान्य स्तर तक पहुंचाने में मददगार साबित होता है। यह कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने वाले तत्वों को खत्म करता है। इसमें रेशा भरपूर मात्रा में होता है, जो शरीर में ग्लूकोज व इंसुलिन की मात्रा को कम करके मधुमेह के खतरे को कम करता है।

जई (ओट्स) की किस्में: केंट, अल्जीरियाई, बंकर 10, कोचमेन, एचएफओ 114, यूपीओ 50

बुआई समय: जई के लिए बुआई का सबसे अच्छा समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवंबर है। 15 अक्टूबर चारा उत्पादन के लिए इष्टतम समय है।

दूरी: चारे के लिए 20-23 सें.मी. पंक्ति दूरी और अनाज उत्पादन के लिए 23-25 सें.मी. मीटर दूरी इष्टतम है।

बीज की गहराई: बीजों की गहराई 3-4 सें.मी. होनी चाहिए।

बुआई का तरीका: बुआई के लिए ड्रिल बुआई प्रसारण से बेहतर है।

बीज की मात्रा: बीज की सिफारिश *विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

100 कि.ग्राम/हैक्टर है।

उपचार: बुआई से पहले कैप्टॉन या थीरम 3 ग्राम से प्रति कि.ग्र. बीजों को उपचारित करें। इससे बीजों को फफूंदी वाले रोगों और विषाणुओं से बचाया जा सकता है।

फसल प्रणाली: चारा-जई-मक्का
भूमि का चयन: अच्छी जलधारण क्षमता वाली मृदा की एक विस्तृत श्रृंखला ओट्स की खेती के लिए अधिक उपयुक्त है। इसकी खेती के लिए 5.6-6 पी-एच मान वाली मृदा अच्छी होती है।

जलवायु: शांत और नम जलवायु में इसकी अच्छी बढ़ोतरी होती है। इसके अलावा, कपास बेल्ट के लिए सबसे अच्छा अनुकूल है। उच्च उपज के लिए अनाज भरने के दौरान ठंडा मौसम महत्वपूर्ण है।

भूमि तैयारी

ओट्स के बढ़ने के लिए अच्छी सिंचाई संभावना के साथ चयनित अच्छी तरह से निकाली गई लोमी मृदा उपयुक्त होती है। मृदा को अच्छी तरह से भुरभुरा तथा समतल बनाने के लिए भूमि की तीन से चार बार अच्छी तरह से जुताई करनी चाहिए और इसे ठीक से स्तरित किया जाना चाहिए। जब मृदा

भौगोलिक वितरण

- विश्व में ओट्स क्षेत्र और उत्पादन क्रमशः 27 मीटर/हैक्टर और 40 मीटर टन है।
- इसकी खेती करने वाले देश रूसी संघ, यूएसए, कनाडा, पोलैंड, चीन, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया हैं।
- भारत में, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल में सीमित क्षेत्र ओट्स उगाने वाले राज्य हैं।

में पर्याप्त नमी होती है, तो बीज बोया जाना चाहिए। यदि मृदा सूखी है, तो पूर्व बुआई प्रकाश सिंचाई दी जानी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक: खेत की तैयारी के समय खेत में अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। 80:40:0 कि.ग्र. एनपीके/हैक्टर उर्वरकों की सिफारिश की गई खुराक को भी डालें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बिजाई के समय डालें। बाकी बची नाइट्रोजन, बिजाई के 30-40 दिनों के बाद डालें।

खरपतवार नियंत्रण: खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई करें। ओट्स के पौधे सही तरह से खड़े हों, तो खरपतवार की रोकथाम की जरूरत नहीं होती है। इसकी फसल में खरपतवार कम पाए जाते हैं।

सिंचाई

- इसे गेहूं की तुलना में अधिक पानी की आवश्यकता होती है।
- 4-5 सिंचाइयों से अच्छी पैदावार मिल सकती है।
- आमतौर पर प्रत्येक फसल काटने के तुरंत बाद सिंचाई अनिवार्य है।
- ओट्स की सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण चरण टिलिंग है।

फसल कटाई: इसे परिपक्व होने के लिए 120-150 दिनों की आवश्यकता होती है। सामान्य तौर पर चारे के लिए 2 या 3 कटिंग होती हैं और फिर अनाज की प्राप्ति होती है।

उत्पादन: हरे चारे की उपज 200-250 क्विंटल और अनाज 15-20 क्विंटल प्रति एकड़ होता है। इसलिए यह उत्तर-पश्चिमी यूरोप और यहां तक कि आइसलैंड जैसे शांत, गीले ग्रीष्मकाल वाले क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।